खिलती कलियाँ

विभागीय पत्रिका

गुनगुनाते हीरक पल

2008 - 2009

दुर्बलताओं से लड़ना है

मुँह से उफ़ तक किए बिना अधिकार हित बढ़ना है।
नहीं आदमी से, उसकी दुर्बलताओं से लड़ना है।
जुड़ता जब संबंध हृदय का भेदभाव मिट जाता है।
देश-जाति-रंगों से बढ़कर मानवता का नाता है
ऊर्ध्वमुखी चेतना, इस्पात फोड़कर आएगी
यह मानव-विकास की धारा आगे बढ़ती जाएगी।

मधु धवन

दो शब्द

(हीरक जयंती विशेषांक)

"खिलती कलियाँ" पत्रिका की रचना, हर छात्र में लेखन-कला को जागृत करने के लिए की जाती है। जिस प्रकार कली के प्रस्फुटन पर फूल के मनमोहक रंगों का आभास होता है। उसी प्रकार आपकी रचनाओं से आपके शक्तिशाली व्यक्तित्व का आभास हो, आप कलियों की भाँति खिलती हुई जग के उपवन को अपनी उज्ज्वल कला से महकाएँ।

स्वायत्तशासी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत "खिलती कलियाँ" पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए विशेष हर्ष हो रहा है। गर्व है कि इसका प्रवर्त्तन एक से बढ़कर अनेकों के प्रयत्न से संपन्न हुआ। इसमें युवा मस्तिष्कों की उपज ही नहीं, उनकी अभिलाषाओं एवं विचारों का बेजोड़ संगम है। आशा है भविष्य में यह पत्रिका असंख्य सुन्दर कलियाँ विकसित कराएगी।

अनुभूति संस्था के कार्यकारिणी सदस्य

श्रेया मेहता	–	*अध्यक्षा*
गीतिका बेद	–	*उपाध्यक्षा*
खुशबू गुप्ता	–	*उपाध्यक्षा*
प्रियंका	–	*महासचिव*
अंजुम जहान	–	*संयुक्त सचिव*
अग्निता/स्वर्णलिपी	–	*सह सचिव*
पूर्णिमा जैन	–	*कोषाध्यक्षा*

अट्ठाइसवाँ संस्करण
2008-2009

अनुक्रम

1.	सबसे बड़ा घर	–	06/EC/68	अंकिता मुखर्जी
2.	स्वतंत्रता जन्मसिद्ध अधिकार	–	06/EL/10	मालविका
3.	नानाजी का वादा	–	06/ZL/06	अग्निता घोष
4.	व्यवहार	–	06/HS/06	प्रीति गुप्ता
5.	विज्ञापन की दुनिया	–	06/FA/09	श्रेया मेहता
6.	टूटा भ्रम	–	06/HS/27	संगीता
7.	बढ़ते बाज़ार बढ़ती समस्याएँ	–	06/EC/24	पूजा सर्राफ
8.	भिखारी	–	06/SC/62	अंबिका
9.	टूटते तारे की कहानी	–	06/PH/39	अनुराधा राय चौधरी
10.	सफल होता छात्र जीवन	–	06/FA/13	जैम्स कैनडी
11.	खौफनाक युद्ध	–	06/EC/20	मोहन प्रिया
12.	मेहनत की कमाई	–	06/FA/36	खुशबू गुप्ता
13.	स्वर्ग का पुरस्कार	–	06/HS/40	काकोली कलई
14.	गुलाब	–	06/EC/18	ऐन जोसी
15.	विश्वमानवीयता	–	06/EC/27	विनीता थामस
16.	अंधकार	–	06/ZL/10	केन्डिडा रेश्मा राजन
17.	गोमती	–	06/EC/43	ऐन जोमी जोसेफ
18.	बैक्टिरिया	–	06/ZL/06	अग्निता घोष
19.	भूलना नहीं	–	06/ZL/25	एन्जल मेरी
20.	जल जीवन का मोल	–	06/EC/43	ऐन जोमी जोसेफ
21.	अगर	–	06/HS/01	नित्या जोस

22.	जहाँ चाह वहाँ राह	–	06/EC/02	अमृता गोलेचा
23.	सही सोच	–	06/EL/19	सॉरा जॉन
24.	बालश्रम	–	06/EC/62	अनीशा जॉन
25.	पंचतत्वों का रण	–	06/EC/18	मोंटी माजिद
26.	मीठा फल	–	06/EL/15	आल्या इलाही
27.	आधुनिक युग	–	06/SC/11	प्रियंका द्विवेदी
28.	माता-पिता	–	06/ZL/18	भव्या
29.	छुट्टी की सुबह	–	06/EL/39	सुदीप्ता मुखर्जी
30.	परिश्रम का महत्त्व	–	06/ZL/18	भव्या
31.	आलस बीमार	–	06/EL/06	सुप्रजा
32.	जीत का उल्लास-खेल और जीवन में		06/EC/08	केरोलाइन
33.	माँ का प्यार	–	06/SW/503	लीबी वर्गीस
34.	जीवन एक गूँज	–	06/FA/04	पूर्णिमा
35.	ईश्वर का प्रेम	–	06/SW/530	सिन्नी के. ओ.
36.	हम किसकी ज्योति से देखते हैं	–	06/SW/535	रिनी
37.	एक फूल और एक मालिक	–	06/SW/534	आशा जोर्ज
38.	चाँद से बात करें	–	06/MT/509	श्वेता रवि
39.	संबंध	–	06/MT/514	मंजूषा नायर
40.	उठेंगे हमेशा	–	06/BT/45	कृतिका पी.
41.	बच्चे काम पर जा रहे हैं	–	06/HS/06	प्रीति
42.	कर भला हो भला	–	06/MT/18	जोसफिन मेजेला
43.	ये जीवन	–	06/EC/53	आइशा आरिफ
44.	एक और अधूरी प्रेम कहानी	–	06/EL/51	कृष्णा डी. आर.
45.	दवाई	–	06/BT/05	गीतिका

46.	मेरा प्यारा त्योहार	–	06/SC/02	शोभा
47.	कल्पनाएँ	–	06/BT/28	अनीजा
48.	सही पहचान	–	06/EL/32	रोज मेरी एस.
49.	देश हमारा भारत प्यार	–	06/PH/26	जननी एस.
50.	बेटी	–	06/HS/04	फातिमा ट्रोपो
51.	खोने पर भी एक दुआ	–	06/SC/50	कृष्णा वेणुगोपाल
52.	प्रकृति	–	06/BT/03	काव्या
53.	प्रेरणा	–	06/BT/26	नीतू
54.	प्रभु का वंदन	–	06/HS/09	मारशिला
55.	बढ़ती आबादी	–	06/HS/36	निकिता
56.	फिर मुझे तेरी	–	06/EC/24	पूजा सर्राफ
57.	बीमारी किसको छोड़ती	–	06/CH/30	सिन्धु
58.	माँ की आँखें	–	06/CH/30	सिन्धु
59.	जीवनी : मदर टेरेसा	–	06/SW/511	गणपति प्रिया
60.	बेटियों का डर	–	06/CH/30	स्वर्णलिपि मोहापात्रा
61.	प्यार	–	06/HS/47	नम्रता शाह
62.	हि लमिल दीप जलाएँ	–	06/SC/12	लक्ष्या
63.	सच्चा प्यार	–	06/EC/62	अनीशा

लघुकथा

सबसे बड़ा घर

एक दिन छह साल की अनुपमा खुशी से चिहुँकती हुई घर आई और अपनी माँ से बोली, "माँ, आपको पता है मैंने आज दुनिया का सबसे बड़ा घर देखा', उसकी आँखों में एक अतुल्य प्रसन्नता थी, मानो उसने ज़िन्दगी को ही समझ लिया हो।

माँ ने पूछा, 'कहाँ देखा तूने इतना बड़ा घर ?' तो अनु बोली, 'आज मैं मिनी के घर गयी थी, उसी का घर इतना बड़ा है'।

माँ ने सोचा फिर तो मिनी के परिवार वालों से दोस्ती करनी पड़ेगी। 'उससे हमारी शान दुगुनी हो जायेगी... हम इतने ऊँचे ओहदे पर पहुँच जायेंगे कि सब हमारी मानेंगे, बस हमारी चलेगी...' उसके दिमाग में और भी कई नीच ख्याल आने लगे। 'तो अनु कल मैं भी उनसे मिलने जाऊँगी।' यह सुन अनु खुशी से नाचने लगी।

माँ उनके घर जाकर देखती है कि एक छोटी-सी मिट्टी की कुटिया थी, जिसकी छत किसी कारण नीचे धँस गयी थी। उसी से वे लोग रहते थे। उसे अपनी बेटी की कही हुई बातों पर आश्चर्य भी हुआ और गुस्सा भी आया। बेटी का हाथ पकड़ कर फौरन वहां से निकल पड़ी और अनु से उसके ऐसे कहने का कारण पूछा। तो वह बोली, "मां आपने देखा नहीं उनकी छत के ऊपर इतना बड़ा आकाश था, चारों ओर फैले हुए खेत उनका आंगन है, हम तो अपनी चार दिवारी को घर मानते हैं लेकिन उनका घर तो यह पूरी दुनिया और उनके रक्षक पैसे नहीं वह परमपिता है', उसकी आँखों में एक शान्ति थी।

अंकिता मुखर्जी, 06/EC/68

लघुकथा

स्वतन्त्रता : जन्मसिद्ध अधिकार

एक लड़का था और उसका नाम था सुरेश शर्मा। वह अपने माता-पिता के साथ अमेरिका में 'शिकागो' नामक शहर में रहता था। उसके मित्र का नाम सकेबरस था और वह एक चूहा था। सुरेश अपने चूहे को बड़ी हिफाजत से रखता था कि उस चूहे को एक पिंजरे में बंद रखता। एक दिन जब सुरेश स्कूल से वापस आया, वह अपने कमरे में गया। सकेबरस को देखने लगा। लेकिन कमरे में उसने क्या देखा कि उसका चूहा मरा पड़ा है। वह रोने लगा। अचानक उसके मन में एक विचार आया, वह सोचने लगा कि सकेबरस की मौत कैसे हुई। तब उसको अपनी गलती का पता चला, कि वह ही उसके चूहे की मृत्यु का कारण है। क्योंकि उसने सकेबरहस की स्वतंत्रता के बारे में कभी नहीं सोचा था और उसी कारण से उसका चूहा मर गया।

मालविका, 06/EL/10

नानाजी का वादा

टिनी अपने नानाजी से बहुत प्यार करती थी। नानाजी ने ही उसे प्रकृति की सुन्दरता के साथ परिचय कराया था, नानाजी ने ही उसे जीव विज्ञान के प्रति जिज्ञासा बढ़ायी थी। टिनी के नानाजी उसके लिए ज्ञान के समुद्र थे।

एक दिन नानाजी की तबियत बहुत खराब हो गई। उन्हें पता था कि उनका अंत निकट था। उन्होंने टिनी को प्यार से पास बुलाया और उसके हाथ में एक छोटा-सा पौधा थमा दिया। टिनी रोती....सिसकती नाना से कहती "आप मुझे छोड़ के न जाना नानू....।"

"नहीं जाऊंगा...भी नहीं" यह कहते हुए नानाजी गुज़र गए।

समय बीत गया। टिनी अब बड़ी हो गई थी। जीव विज्ञान में डिग्री कर रही थी। छुट्टियों में अपनी यादें ताजा करने घर लौटी। घर के सामने नानाजी का दिया हुआ पौधा आज बड़ा पेड़ बन गया था। उस पेड़ की छाया का एहसास उसे ऐसा होने लगा मानो नाना जी का कोमल स्पर्श बालों को सहला रहा हो। उसे स्मरण हो आया नानाजी का कथन–"यह हाथ सदा तेरे सिर पर रहेगा।"

अग्निता घोष, 06/ZL/06

व्यवहार

कहने को तो आज दुनिया में लोग मदद करने को तत्पर रहते हैं। पर वक्त आने पर सबको मुकरते देर नहीं लगती। इसका आभास मुझे है।

बात उस समय की है, जब मैं अपनी छोटी बहन के साथ शहर आया। हमारे गाँव में सूखा पड़ गया था, और लोग हा-हाकार कर रहे थे। जब भूख और प्यास असहनीय हो गई, तब हम सबने गाँव त्याग देना ही ठीक समझा।

अपनी छोटी बहन, और भाई को लेकर मैं बहुत आस से अपने चाचा के घर पहुँचा। कहने को तो 2 दिन तक चाचा ने भरपूर प्यार दिखाया, पर जब मैंने यह बताया, कि अब हम सब उनके घर पर ही रहेंगे, तो उनका संपूर्ण व्यवहार बदल गया है। वह हम सबको घर से बाहर निकाल देते हैं। मैंने चाचा के चरण छूए और बिदा लेली। बहन और भाई को लेकर मैं अनजान सड़क पर चल दिया। मन में हज़ारों सवाल उठ रहे थे। कि अब क्या होगा ?

बहन, भाई का पेट भरने के लिए मैंने बर्तन धोने का घर में काम करना आरंभ कर दिया। मैं बर्तन धोता और बदले में वह मुझे खाना देते। यह हमारे लिए पेट भरने को काफ़ी था। धीरे-धीरे मुझमें और पाने की ललक छा जाती है। मैं दिन-रात काम करने को तैयार हो गया। पैसा-पैसा ही मेरे मस्तिष्क में छा गया था।

धीरे-धीरे देखते-देखते हमने अपना बसेरा बनाया, और देखते ही देखते आलीशान महल के हम अधिकारी हो गए।

अतः इंसान अपनी लगन से अपनी हाथ की लकीरें बदल सकता है।

प्रीति गुप्ता, 06/HS/06

विज्ञापनों की दुनिया

विज्ञापनों की दुनिया एकदम अनोखी दुनिया है। लुभावनी, मायावी और चमकदार। लेकिन क्या ये विज्ञापन सच्चे हैं ? आज अगर टी.वी. देखें, तो हमें सीरियल से ज्यादा विज्ञापन देखने पड़ते हैं। इन विज्ञापनों से प्रभावित होकर हम कई नई चीज़ें खरीदते हैं, चाहे उनकी हमें ज़रूरत हो या नहीं। लेकिन क्या हमने कभी यह सोचा कि ये विज्ञापन कितने सच्चे हैं ?

चार हफ्ते में चेहरे का रंग निखर जाना, पंद्रह दिन में केश मुलायम होना, एक महीने में अपनी जवानी को लौटना, कुछ पीने से हाइट बढ़ना तो कुछ खाने से स्टार बनना- ये सब चीजें देखने और सुनने को तो अच्छी लगती हैं, लेकिन ग्राहक को चालाकी से सोचकर यह तय करना चाहिए कि क्या वास्तव में जो बताया गया है, वह संभव है या नहीं।

विज्ञापन की मुख्य कोशिश होती है ग्राहक को सूचित करना, हाल ही में आई नई चीजों के बारे में विज्ञापन ग्राहक को अपने आकर्षण में लाते हैं और उन्हें खरीदने को प्रेरित करते हैं। लेकिन आजकल के विज्ञापन में एक उत्पाद के बारे में सूचित करने से हटकर एक उत्पाद की तुलना में दूसरे उत्पाद को बेहतर बनाना ही लक्ष्य हो गया है। दूसरे उत्पाद पर सीधा वार न कर, तिरछेपन से बहुत कुछ बताते हैं।

प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा स्टार को विज्ञापन में देखने पर बच्चे भी उस चीज़ की मांग करने लगते हैं। हमें इसका दोष स्टार्स पर नहीं डालना चाहिए, किन्तु हमें अपने बच्चों को असलियत के बारे में ज्ञान देना चाहिए और यह बताना चाहिए कि जो दिखता है, वह वैसा नहीं है। हममें सच्चे उत्पाद की परख करने की क्षमता रहनी चाहिए जिससे कि हम सुरक्षित तथा चतुर ग्राहक बन सकें।

श्रेया मेहता, 06/FA/09

टूटा भ्रम

एक बार मोहन को किसी इंटरव्यू में जाना था। वह बहुत डर रहा था। डर से उसका चेहरे का रंग उतर जाता है। अब इंटरव्यू का समय भी पहुँच गया था। मोहन ने अपने डर को काबू में रखकर अपने प्रश्नों का उत्तर बेझिझक होकर दिया और घर आ गया। वह जानता था

कि ऐसे इंटरव्यू दिखावे के लिए होते हैं। पाँचवे दिन उसे कोरियर से नियुक्ति पत्र जब मिलता है तो उसे काठ मार गया।

***संगीता*, 06/HS/27**

बढ़ते बाज़ार बढ़ती समस्याएँ

आज 15 दिन बाद जब मैं राशन लेने गई तो सामान के दाम देख मेरे होश उड़ गए। दो सप्ताह में ही वस्तुओं के मूल्यों में इस प्रकार की बढ़ोतरी देख मैं अचंभित रह गई। अब तो भारत की बहुत-सी आर्थिक समस्याओं में महँगाई की समस्या एक प्रमुख समस्या है। परन्तु महँगाई क्यों बढ़ती है ? महँगाई के कारण अधिकांश आर्थिक व सामाजिक हैं। महँगाई के कारण प्रायः जनसंख्या में तेजी से वृद्धि, कृषि उत्पादन-व्यय में वृद्धि, कृत्रिम रूप से वस्तुओं की पूर्ति में कमी, मुद्रा-प्रसार में बढ़ोतरी, प्रशासन में ढील, घाटे का बजट होना, संगठित उपभोक्ता की कमी व धन का असमान वितरण होना है। इन कारणों से उत्पादकों को भी नुकसान उठाना पड़ता है। क्योंकि उत्पादन पर भी असर होता है। देश के नागरिकों के लिए महँगाई अभिशाप रूप है। भारत एक गरीब देश है और यहाँ की अधिकांश जनसंख्या की आय के साधन सीमित हैं। इस कारण साधारण नागरिक और कमज़ोर वर्ग के व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते और बेकारी इस कठिनाई को और भी बढ़ा देती है। व्यापारी अपनी वस्तुओं की कृत्रिम कमी उत्पन्न कर देते हैं जिसके कारण दामों में अनियंत्रित वृद्धि हो जाती है। कम आय वाले व्यक्ति इन वस्तुओं से वंचित रह जाते हैं। महँगाई के बढ़ने से काला बाजारी को भी प्रोत्साहन मिलता है। देश की अर्थव्यवस्था कमज़ोर होने लगती है और योजनाओं के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं हो पाते। परिणामतः देश की प्रगति मार खाती है। महँगाई को कम करना अति आवश्यक है। इसके लिए सरकार को समयबद्ध कार्यक्रम बनाना होगा। किसानों को सस्ती कीमत पर खाद, बीज और उपकरण उपलब्ध कराने होंगे, ताकि कृषि-उत्पादन की कीमतें कम हो सकें। खाद्य-पदार्थों की वितरण-प्रणाली में भी सुधार करना होगा। मुद्रा-प्रसार को रोकने के लिए बजट के घाटे को पूरा करने के लिए नए नोट छापने की प्रणाली को बंद करना होगा। जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के लिए निरन्तर प्रयास करने होंगे। शक्ति और साधन कुछ विशेष लोगों तक सीमित न रह जाए और धन का समान बँटवारा हो सके। सहकारी वितरण संस्थाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। प्रशासन को पूरी निष्ठा व एकता से कार्यवृत्त रहना चाहिए। यदि समय रहते महँगाई के इस दैत्य को वश में नहीं किया गया तो हमारी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी और हमारी प्रगति के सारे रास्ते बंद हो जाएँगे। भ्रष्टाचार अपनी जड़ें जमा लेगा और नैतिक मूल्य पूरी तरह समाप्त हो जाएँगे।

***पूजा सर्राफ*, 06/EC/24**

भिखारी

कुछ समय पहले की बात है। मैं अपने माता-पिता और बूढ़ी बहन के साथ मेला देखने गई थी। मुझे कुछ मीठा खाने की बहुत इच्छा हो रही थी। इसलिए मैं और मेरी बहन एक मिठाई की दुकान पर जाकर गरम-गरम जलेबियाँ खरीदने लगे। मेरे माता-पिता कुछ ही दूर पर खड़े झूलों की सैर करने के लिए टिकट खरीद रहे थे।

जैसे ही मिठाईवाले ने मेरे हाथ में जलेबियाँ थमाई, मैंने एक आवाज़ सुनी, "कुछ हमें भी दे दो दीदी' मैंने पीछे मुड़कर देखा तो कुछ बारह-चौदह बरस का छोटा-सा लड़का खड़ा हमसे भीख माँग रहा था। उसे देखकर मुझे लगा कि यह उसका रोज़ का धँधा है, जब कि वह कुछ काम करके भी अपनी रोज़ी-रोटी कमा सकता है। इसलिए मैंने उसे कुछ भी देने से मना कर दिया। जब मेरी बहन अपने बटुए से कुछ पैसे उसे देने के लिए निकालने लगी तो मैंने उसे भी रोक दिया। वह छोटा लड़का मुझे निराश नज़रों से घूरने लगा और कुछ देर वहीं खड़ा मुझे ताकता रहा। उसकी आँखों में छुपे दुख को देख मेरा दिल पिघल गया और उसे कुछ देने को मन में इच्छा जागी परन्तु मैं उसमें भीख माँगने की आदत को सराहना नहीं चाहती थी इसलिए मैंने उसकी ओर ध्यान न देने की चेष्टा की।

कुछ देर तक मुझे घूरने के बाद जब वह लड़का चला गया तो मेरे माता-पिता वहाँ आए ओर बड़े ही चिंतित होकर हमसे पूछने लगे कि क्या हुआ। जब मेरी बहन ने उन्हें सारी बात बताई तो उन्होंने मुझे डाँटा और मैं भी अपने अन्दर उभरने वाले अफसोस और दुख को दबा न सकी।

दुकान से जब हम निकले तो उस लड़के को फिर से वहाँ देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह इस बार मेरे पास आकर मुझसे पैसे न माँगकर मुझे अपनी माँ से मिलवाकर सब कुछ अपने घर के बारे में बताने लगा। अपनी भूख को तो वह सहन कर सकता था, लेकिन अपनी माँ की भूख को वह देख न पाता था। अतः वह हाथ को फैलाकर लोगों से पैसे माँगता था।

जब उसकी इस करुण कहानी के बारे में पता चला तो मुझे दुख हुआ कि मैंने एक मासूम बच्चे की मासूमियत को न जान पायी, तो क्या मैं अपनी समाज की सार्थकता के लिए कदम बढ़ाऊंगी।

उस छोटे से बच्चे ने मुझे समाज में रहकर सच्चा इंसान होने का पाठ सहज ही बतला दिया। फिर मेरे मन में ख्याल आया कि क्या उसकी माँ एक बार भीख माँगकर कुछ काम करने की शिक्षा नहीं दे सकती थी...?

अंबिका, 06/SC/62

टूटते तारे की कहानी

संध्या के समय चंद्रमा की शीतलता का आनंद लेती हुई हम सहेलियाँ परेशानियों और मन की भावनाओं के विषय में बातें कर रही थीं। अचानक आसमान में एक टूटा तारा गिरता हुआ देखा और जाने क्यों मन प्रफुल्लित एवं रोमांचित हो उठा। लेकिन निस्संदेह यह रोमांच 'टूटते तारे' या 'उल्का' के जीवन से अधिक नहीं। अंग्रेज़ी में वैज्ञानिक शब्दावली के अन्तर्गत 'मीटिओर' कहे जाने वाला उल्का अंतरिक्ष का एक छोटा सा टुकड़ा है जो अत्यन्त वेग से पृथ्वी के वायुमंडल से टकराता है और घर्षण के कारण ऊष्मा पैदा होती है। जिसके कारण वह टुकड़ा बाष्प बन जाता है।

विचारों के तूफान के बाद उनमें से सर्वोत्तम का पालन करके अपने जीवन को उल्का या प्रकाश कौंध की भाँति चमकाना चाहिए। किन्तु एक मात्र भिन्नता का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे विचार मीटिऑर से उल्का-पिण्ड बनकर धरती पर गिरकर स्थाई निशान न बनाते हुए अपने कार्यों को प्रकाशित रूप में महान बनाए रखे और फिर अपनी छाप छोड़ दें। मीटिओराइड अंतरिक्ष में रहते समय जाना जाता है और धरती से टकराने के बाद मीटिऑराइट।

उल्का वृष्टि का दृश्य तो बड़ा मनमोहक होता है। इसलिए मन में एक विचित्र आशा बनी रहती है कि पृथ्वी मीटिओराइट धारा को पार कर ले। लेकिन मैं तो टूटते तारे का इन्तजार करके भी सन्तुष्ट रहती हूँ क्योंकि उसे देखकर मैं 'विश' यानी इच्छा पूरी हो वरदान माँगती हूँ।

कुछ उल्का को स्पौरैडिक उल्का कहते हैं। लीओनिड एक प्रसिद्ध मीटिओराइड धारा है। सृजन के आधार पर उल्का तीन प्रकार के होते हैं। इनके अनेक उपयोग भी हैं जैसे अंतरिक्ष के विषय में जानकारी आदि।

एक क्षण के लिए आसमान में चमकनेवाले इन टूटते तारों के विषय में जाना जाए तो कितना मजा आता है। क्यों, सही कहा ना ?

अनुराधा राय चौधरी, 06/PH/39

सफल होता हमारा छात्र जीवन

प्राचीन आचार्यों ने मानव जीवन को चार भागों में विभाजित किया है। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास। इनमें प्रथम है ब्रह्मचर्य। विद्यार्थी जीवन ब्रह्मचर्य के परिवर्तित रूप हैं। यह विद्याध्ययन का समय माना जाता है। जो विद्या प्राप्त करने में इच्छुक है, वे विद्यार्थी हैं। विद्या प्राप्त करने का उपयुक्त समय है विद्यार्थी जीवन।

—आज का विद्यार्थी, कल का नागरिक है। अच्छा नागरिक बनने के लिए विद्या-प्राप्त करना बहुत जरूरी है। अतः मानव जीवन में विद्यार्थी जीवन बहुत महत्वपूर्ण है। पाँच वर्ष की आयु तक बच्चा अबोध रहता है। उनका मन चंचल होता है। इसलिए माता-पिता को इस अवसर पर बच्चों पर अधिक ध्यान रखना चाहिए। इसके बाद दस-बारह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते वह कुछ विवेक से कार्य करना शुरू करता है। 15-16 वर्ष की आयु में वह सोच समझकर कार्य करने में सक्षम बनता है। इसी अवस्था में अपना मार्ग निर्धारित करता है।

विद्यार्थी का मुख्य कर्तव्य शिक्षा प्राप्त करना है। उसे एकाग्र भाव से पढ़ना चाहिए। विद्यार्थी जीवन भौतिक, आध्यात्मिक, व्यावहारिक, सामाजिक आदि है। केवल ज्ञान प्राप्त करने से विद्यार्थी का कर्तव्य पूरा नहीं होता। उसे सदैव अपने कर्तव्य और अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए। उसके अपने परिवार माता-पिता और राष्ट्र के प्रति कुछ कर्तव्य है। आदर्श रखनेवाला विद्यार्थी सदा उसके अनुसार अपने जीवन-क्रम को बनाने का प्रयत्न करता है।

विद्यार्थी का राजनीति से संबन्ध कैसा रहना चाहिए यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। राजनीति में जिस छात्र को रुचि हो उसे राजनीति का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। सामान्य ज्ञान के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है। क्रियात्मक राजनीति से दूर रहना चाहिए। राजनीति को भ्रष्टाचार से मुक्त करना चाहिए। विद्यार्जन के बाद विद्यार्थी अपनी इच्छा के अनुसार राजनीति में भाग ले सकता है। राजनीति के संबद्ध करने का दायित्व उन पर है।

आजकल के विद्यार्थी में अनुशासन का अभाव है। इसका कारण भी वर्तमान राजनीति है। उनका जीवन विलासमय होता जा रहा है। वे फैशन के पीछे जाना चाहते हैं। विद्यार्थी को अपने कर्तव्य पर विचार करना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में दया, प्रेम, परोपकार आदि उत्तम गुणों का अभ्यास होना चाहिए। विद्यार्थी को बुरी आदतों से बचकर रहना चाहिए। अहंकार, क्रोध, लोभ आदि से बचकर रहना चाहिए। तभी वह आदर्श विद्यार्थी बन सकता है।

तिया जैम्स कैनडी, 06/FA/13

खौफनाक युद्ध

मनोविज्ञान के आधार पर यह माना जाता है कि बचपन से ही मनुष्य में झगड़ा करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। इसलिए हम अनंतकाल से यह देखते आये हैं कि मनुष्य में असंख्य लड़ाईयाँ दो देशों के बीच, दो मनुष्यों के बीच दो गाँवों के बीच या दो जातियों के बीच हुई थी। इतिहास हमें इन युद्धों के बारे में जानकारी देता है।

पुराने जमाने में युद्ध तीर-धनुष, तलवार भाला और घोड़ों से लड़े जाते थे। फिर बंदूक और तोप तथा उन्हें उठाने के लिए मोटर गाड़ियाँ और सेनाएँ काम में लाये गये, युद्ध समाप्त होने

के बाद भी उसका खौफ़ रहता है। ये युद्ध वायुमण्डल को दूषित करता है जिससे बहुत खतरनाक बीमारियाँ फैलती है। आज भी, बम फेंके जाने के इतने साल बाद भी जापान में यह खौफ़ हम देख सकते हैं।

एक और खतरा यह है कि आजकल युद्ध कुछ देशों तक सीमित नहीं रहे। यदि समय पर रोका नहीं जाता तो यह युद्ध विश्व महायुद्ध के रूप में बदल जायेगा। इससे यह स्पष्ट है कि युद्ध द्वारा मानवीय संस्कृति का पतन होता है। यूनाईटेड नेशन्स आरगनाइजेशंस (यू.एन.ओ.) को युद्ध रोकने के लिए स्थापित किया गया था। हम सिर्फ आशा कर सकते हैं कि मनुष्य अपनी इस भूल को समझे और अपनी शक्ति को विश्व शांति के लिए प्रयोग करे।

मोहन प्रिया, 06/EC/20

मेहनत की कमाई

सुरेश अपने पिता के पास गुजारिश लेकर गया कि उसकी शादी करा दे क्योंकि वह मेहनत नहीं करता था। पिता उसका विवाह नहीं करना चाहते थे इसलिए उन्होंने कहा कि "मैं कल तुम्हारी परीक्षा लूँगा।" अगर तुम कामयाब हुए तो तुम्हारा विवाह करँवा देंगे। वह उसे एक तालाब के पास ले गए और अपनी जेब से एक सिक्का देते हुए कहा कि इस सिक्के को तलाब में फेंक दे। अगर यह नहीं डूबा तो वह अपने बेटे की शादी करा देंगे। इस प्रकार उन्होंने कई बार यह कार्य कराया। हर बार सिक्का डूब गया।

पिता ने पुत्र को समझाया कि यह उनका सिक्का है इसलिए डूब जाता है। पिता ने उसे अपनी मेहनत की कमाई का एक सिक्का लाने को कहा। बेटे ने अपनी मेहनत की कमाई का सिक्का लिया और अपने पिता के साथ तालाब के पास पहुँचा। लाख कोशिश करने के बाद भी वह सिक्के को तालाब में फेंकने का मन न बना पाया। तब पिता ने कहा कि "हाँ, अब तुम मेहनती और समझदार हो गए हो। तुम्हें पैसों की कीमत का पता लग गया। अब मैं तुम्हारा विवाह करा दूंगा।"

खुशबू गुप्ता, 06/FA/36

स्वर्ग का पुरस्कार

एक दिन स्वर्ग से एक थाली नीचे जमीन पर गिरी। परी को आवाज सुनाई दी कि जो कोई भी यहाँ दानी है यह थाली उसके हाथ लगने पर सोने की थाली बन जायेगी। शहर के सभी धनी थे। मंदिर में भीड़ लग गई। सभी लोगों ने उस थाली को अपने हाथ में लिया लेकिन वह थाली सोने की थाली बनने के बजाय, मिट्टी की थाली बन गई। उस मंदिर के पुजारी बहुत दुःखी हुए कि कोई भी व्यक्ति उदार दिल का नहीं था। वहाँ पर गाँव में एक गरीब किसान ने एक

भिखारिन को रोते हुए देखकर अपने पास रखे थोड़े से चावल उसको दान दे दिये। इसके बाद वह प्रार्थना करने के लिए मंदिर चला गया। उसे मालूम नहीं था कि वहाँ पर किसी बात पर चर्चा हो रही थी। जब पुजारी ने उसके हाथ पर थाली रखी तो वह सोने की थाली बन गई।

काकोली कलई, 06/HS/40

गुलाब

कुछ दिन पहले मेरी बगीचा में बहुत प्यारे
गुलाबों का एक गुच्छा खिल आया
न जाने क्यों इतना आकर्षण
मैंने किसी पुष्प में न पाया कभी

इसीलिए उस पुष्प गुच्छ को मैंने
प्यार से उस खाली कोने में ला सजाया
उस खाली कोने को इन गुलाबो ने इतना महकाया
कि मुरझाये पुष्पों को हटाते ही
मन मुरझा जाता।

पुष्पों का रक्तिम वर्ण मैला हो चुका था
फिर भी अतल तल में बसी थी वही महक
जिसे प्रथम दृष्टि में पाया था मैंने

वह कोना उस दिन से यूँ ही खाली रहता है
पर आज भी उस कोने से हर पल हर क्षण
ऐसी खुशबू आती है जिसको मैं ही महसूस कर पाती हूँ।

ऐन जोसी
06/EC/18

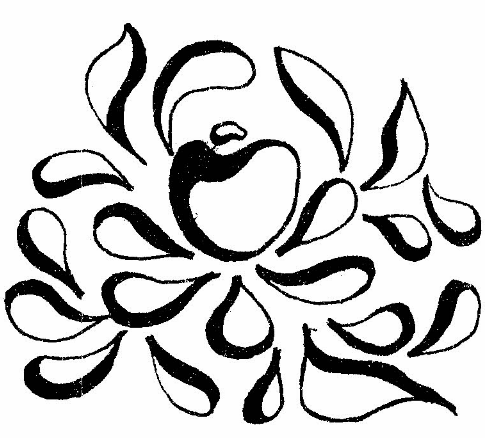

विश्व मानवीयता

मानव का जन्म पाकर
इस अमूल्य मोती को लेकर
इसे पूरी तरह निभाना,
मन में मानवीयता भरकर।

मानवीयता एक ऐसा भाव है
जिसमें बस करुणा का छाँव है
पृथ्वी पर प्रेम की छाया है
चारों ओर खुशी की माया है।

प्रकृति हमें सुनाती है,
सब जगत दिखाती है,
प्रकृति से सीखे मानव
मानवीयता का सच्चा भाव।

कोयल कुहु कुहु से गाती
भूमि में अब हो शांति, शांति
और कुछ नहीं है उसकी भाँति,
मानव तुम बन जाओ शांती के साथी

मानव तुम इन फूलों को देखो
देखकर इनसे कुछ तो सीखो
फूल तुम्हें खुश करते तो
इसी तरह खुशी फैलाओ।

मानव तुम क्यों नहीं दुःखी,
तुम्हारे पड़ोसी है अब भूखी,
तुम्हारा दिल क्या बन गया सुखी,
खोलो मन में प्यार की खिड़की।

मानव छोड़ो भूमि रण के,
दिल को भरो दया-करुण से
दिल में जोर से ऐसा प्रण ले,
कि बने जीवन दया का हर दम।

विनीता थॉमस
06/EC/27

अंधकार

आवद्ध है संसार, रात के अंधकार से,
बहता है विषाद हर पल महाबल से,
दुर्बल और निराश हो परमात्मा ताकता है,
इस राक्षस रूपी मानव के अवतार में।

छिपी रहती है अतिदुष्टता रोम-रोम में, प्यार से
सबको परिचित करती है अपने से,
बन जाते हैं सब उसके अनुयायी।

दहल से अंधे हो जाते हैं,
जीवन की उत्तमता से,
कब आएगी रोशनी,
इस अंधकार को दूर करने,
मानव चित्त को जग में जगाने की !

केन्डिडा रेशमा राजन
06/ZL/10

लघु कथा

गोमती

रात का समय था। खेत में काम करने के बाद गोपालराम और उसकी गाय गोमती घर वापस जा रहे थे। रास्ते में गोपालराम अपनी गाय को शिकायत कर रहा था। "गोमती तुम ऐसी क्यों हो? मैं तुम्हारे लिए कितने रुपये खर्च करता हूँ। और इस पैसे का आधा भी मुझे वापस नहीं मिल रहा है। तुम बहुत खाती हो और दूध नहीं देती। क्या करूँ मैं? देखो तो, चन्द्रबाबु की गाय, पर पाँच लीटर दूध तेती है, तुम सिर्फ दो लीटर देती हो।....."

उस वक्त गोमती ने आवाज की और रस्सी से छूट भागकर रास्ते के एक कोने में जाकर कूदने लगी। गोपालराम ने उस समय तेज़ी से उधर जाकर देखा-एक साँप मरा पड़ा था। गोपालराम समझ गया कि गोमती ने उसकी जान बचाया। उसने गाय के गले को सहलाया।

ऐन जोमी जोसेफ
06/EC/43

बॉक्टिरीया

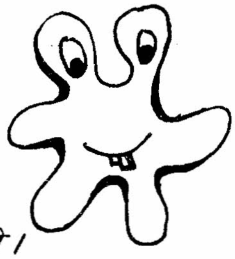

ओ बॉक्टिरिया,
तुम तो हो एक फेक्टर यार।
कभी करती हो हमारी हानि,
तो कभी दूर करती हो हमारी परेशानी।
बनाती हो तुम जूट को सूत,
लगाते ही दाँत में बन जाती हो भूत।
दूध को बनने देती हो दही,
जो हमारे सेहत के लिए होती है सही।
कभी देती हो हमें सर्दी-जुकाम और बुखार,
तो कभी दवा बनकर, करते हो उद्धार।
इस कारण विज्ञान,
करता तुम्हारा गुणगान।

अग्निता घोष
06/ZL/06

भूलना नहीं....

भूलना नहीं, भूलना नहीं,
माँ की ममता को भूलना नहीं।

भूलेंगे नहीं, भूलें नहीं,
नेताओं के त्याग को और बलिदानों को।

बढ़ाएँगे बढ़ाएंगे
देश को आगे बढ़ाएँगे।

भगाएँगे भगाएँगे
आतंकवादियों को भगाएँगे।

सच कराएँगे सच कराएँगे
'कलाम' के सपनों को सच कराएँगे।

झुकेंगे नहीं, झुकेंगे नहीं
विद्रोहियों के आगे झुकेंगे नहीं।

फहराएँगे फहराएँगे
झण्डा ऊँचा फहराएँगे।

इ. एन्जल मेरी
06/ZL/25

जल-जीवन का मूल

हमारे अच्छे स्वास्थ्य के लिए पानी पीना बहुत आवश्यक है। जो पानी हम पीते है उसका शुद्ध होना भी बहुत आवश्यक है। इसलिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि हमारे पीने का पानी पीने के लिए योग्य है या नहीं? लेकिन रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग तीन करोड़ लोगों को स्वच्छ और शुद्ध पानी नहीं मिल रहा है। जो पानी मिलता है उसमें बीमारियाँ फैलानेवाले कीटाणुओं की संख्या भी कम नहीं। इसके परिणाम यह है कि ऐसे दूषित पानी पीकर लोग डायरिया, चर्म रोग, टी. बी. हेपेटाइटिस आदि रोगों का शिकार बन रहे है। दुनिया में ज्यादातर बीमारियाँ अशुद्ध जल पीने से होते हैं। ये खतरनाक बीमारियां ज्यादातर बच्चों को होती है। इसलिए हमें पानी को स्वच्छ रखना चाहिए। इसके लिए सबसे श्रेष्ठ तरीका है क्लोरिन का इस्तेमाल करना पानी को शुद्ध करने के लिए। पानी में क्लोरिन को मिलाने से हानिकारक कीटाणुओं का नाश हो जाता है। एक और तरीका है जिससे हम पेयजल को शुद्ध कर सकते हैं। यह है फिल्टर कैंडल का इस्तेमाल करना। पानी को उबालने से भी पानी कीटाणु विमुक्त हो सकता है। इन सारे तरीकों को अपनाकर हम शुद्ध पानी पीकर अपने स्वास्थ्य को ठीक रख सकते हैं।

ऐन जोमी जोसेफ
06/EC/43

अगर

अगर न होता मेरा दोस्त
तो मेरे साथ खेलता कौन?
अगर न होता मैं
तो उसके साथ खेलता कौन?

अगर नहीं होते हम दोनो
तो बारिश में खेलता कौन
अगर न होते हम सब
तो प्रकृति को सुंदर बनाता कौन?

?

नित्या जोस
06/HS/01

जहाँ चाह वहाँ राह

आज सुधा चन्द्रन एक अच्छी नृत्यांगना है। वे काफी प्रसिद्ध हैं। पर जब वे तेरह वर्ष की थी तो एक दुर्घटना हुई थी। उसके कारण उसकी जान जा सकती थी या तो उन्हें अपना पैर कटवाना पड़ता। पर वे बहुत बहादुर थीं। अपना पैर कटवा लिया। फिर भी उन्हें अपना काम करना था। तो इसी कारण उन्होंने नकली पैर लगवा लिया। आज वे बहुत अच्छी नृत्यांगना है। बहुत अच्छा नाच करती हैं क्योंकि उनके मन में इच्छा, चाह थी। मनुष्य अगर कुछ ठान ले तो वह कर सकता है।

अमृता गोलेचा
06/EC/02

सही सोच

सीता रविपुर गाँव में रहती थी। निर्धन होने के कारण वह स्कूल नहीं जाती थी। एक दिन जंगल में लकड़ी इकट्ठा करते समय अचानक उसने एक आवाज़ सुनी। नदी के पास पहुँचकर उसने देखा कि एक लड़की नदी में बह रही है। सीता ने पानी में कूदकर लड़की की जान बचायी। जब उस उसकी बहादुरी के लिए बच्ची के पिता ने धन देना चाहा तो उसने कहा-मुझे पैसे नहीं शिक्षा चाहिए।

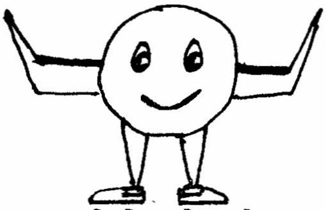

सॉरा जॉन
06/El/19

बाल श्रम

हमारे देश में अनेक सामाजिक समस्याएँ व्याप्त है। बाल श्रम की समस्या भी उनमें से एक है। यह भारतवर्ष की एक प्रमुख तथा विकट समस्या है। बाल श्रम का अर्थ है 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से वैतनिक अथवा अवैतनिक कठोर तथा मनमाना कार्य करवाना। समर्थ तथा धनवान व्यक्तियों के बच्चे जिस आयु में खेलते-कूदते हैं, पढ़ते-लिखते हैं तथा अपने भविष्य के प्रति निश्चिंत व सजग रहते हैं, उसी आयु में निर्धन परिवार में जन्म लेने वाला बच्चा अपने कोमल शरीर तथा हाथों से कठोर श्रम करके अपने परिवार की जीविका चलाने में अपने माता-पिता की सहायता करता है। आखिर उसका दोष क्या हैं? बस इतना कि उसने एक निर्धन परिवार में जन्म लिया? इसी पाप का परिणाम वह मासूम बच्चा जीवन भर भुगतता है। बचपन से ही श्रम की भट्ठी में झोंक दिया जाता है।

कई बार कुसंगति अथवा घरवालों के दुर्व्यवहार के कारण भी भावुक मन के बच्चे बिना भावी परिणाम सोचे घर से भाग जाते हैं। उसके बाद ही उनके शोषण की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। समृद्ध घरों की पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ भी घरेलू नौकरों के

रूप में छोटे बच्चों को ही प्राथमिकता देती है क्योंकि उनसे खतरे की सम्भावना कम या लगभग न के बराबर रहती है, होटलों, दवाओं तथा छोटे-मोटे कारखानों में भी अनेक बाल श्रमिक देखे जाते है, इनका वेतन तो बहुत कम रहता है, परन्तु इनके मालिक मनचाहा कार्य करवाते हैं। बच्चों के काम के घंटे अधिक होते है। स्वतंत्रता के 60 बसन्त देख लेनेवाली हमारी भारत माता के ये नन्हें सपूत आज भी बाल श्रम जैसी समस्याओं के कारण परतन्त्रता का अन्धकारमय जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हैं।

बच्चे किसी भी राष्ट्र का भविष्य होते हैं, अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने का दायित्व देश का होता है। जब प्रत्येक बच्चे की शिक्षा, विकास तथा लालन-पालन का ध्यान रखा जाएगा तभी उसका व्यक्तित्व भली-भाँति प्रस्फुटित हो सकेगा। बच्चे एक नन्हे कोमल पौधे के समान होते हैं हमारे भारत में तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों से शारीरिक श्रम न करवाने का नियम बना हुआ है, किन्तु इसका पालन नहीं किया जाता है।

यह राष्ट्र का प्रथम तथा सर्वोपरि कर्तव्य है कि जो अपने बालयकाल में ही परिस्थितिवश श्रम तथा अन्य विषम परिस्थितियों में फँस चुके है, उनके सुधार व पुनर्वास का प्रबंध करे। बच्चों से उसका बचपन छीन लेना कानूनन एक अपराध है। इस समस्या से मुक्ति का प्रयास मानवता की तरफ एक पावन कदम होगा।

अनीशा जॉन
06/EC/62

पंच तत्त्वों का रण

नीले अंबर पर काली घटा ऐसी छा गई है
एक बूँद, दो बूँदें, तीन बूँदें
धीरे-धीरे वह सूखी धरती की प्यास बुझा रही है
प्यासी धरती इस पानी को तेजी से निगलती जा रही है
घटाएँ पानी बरसती जा रही है
रुकने के वह नाम ही नहीं ले रही है।

लो! देखो आसमान में कौन आया है
इस सुमेल को समाप्त करने के लिए कौन आया है
उसने हटा दिया है घने बादलों को
फिर एक बार छीन लिया है
धरती से उनका अमूल्य उपहार को

कौन है वह?
कौन है जो धूप लाता है?
कौन है जो तत्वों की इस लड़ाई में हमेशा आगे आता है?

मोंटी माजिद
06/EC/18

मीठा फल

किसी गाँव में एक बहुत आलसी लड़की रहती थी। वह कभी कोई काम नहीं करती थी। रोज़ की तरह सब बच्चे शाम को कंचे खेल रहे थे। सबका निशाना लग गया परन्तु एक लड़के की कोशिश अभी जारी थी। वह लड़की उस लड़के के पास जाकर कहती है कि यह सब बेकार के काम हैं और आराम ही सबसे बढ़िया चीज़ है। लड़का उसकी बातों को अनसुना कर अपने लक्ष्य पर ध्यान देता है। इस बार वह पूरे जोश से निशाना लगाता है और सफल हो जाता है। यह देखकर लड़की आश्चर्य में पड़ जाती है, तभी वह लड़का उसके पास आकर कहता है, "मेहनत का फल मीठा होता हैं।"

आल्या इलाही
06 / EI / 15

आधुनिक युग

आज तेज मशीनों का युग।
सारी दुनिया में है रोग।

फास्ट गाडी-फास्ट फूड
फास्ट लाइफ की माया है।

नव जीवन का मंत्र है।
यही आन का तंत्र है।

घर का सब कुछ तुच्छ हो गया
अल्प समय में जीना ज्यादा

उठो समय के साथ चलो
बढ़ रहा मौत का साया।

प्रियांका द्विवेदी
06 /SC / 11

माता - पिता

भूलों न माता-पिता को,
अपने जीवन दाता को।
चरणों में उनके आशीष है।
जो छिपा है सजाओं में।

उनके प्यार के सागर में डूब जाओं
तो बदल जायेगा जीवन तुम्हारा।
तुम महान बनो,
यही आस है उनकी।

उनके इस सपने को पूरा कर
मान रखना उनका सर्वदा

भव्या
06/Z1/18

छुट्टी की सुबह

शनिवार की रात को मन में सोचा
जल्दी सो जाऊ क्योंकि कल है छुट्टी की सुबह
करना है कल ढेर सा काम।
लेकिन इन्टरनेट के सामने ऐसे बैठी रही

कि पता ही न चला कब समय बीत गया।
सोते-सोते लगभग सुबह का पहला पहर निकल गया
आँख खुली तो पता चला सारा दिन ढल गया।
काम का बोझ, समय का अभाव

खल रहा है अब कल के इन्टरनेट का रुकाव,

जल्दी-जल्दी किया पूरा हफ्ते का काम
भागी-भागी गयी खाने में की तरफ
वाह री किस्मत तब तक खाना था खतम,

मुँह लटकाये जब वापस आई कमरे में अपने,
गुजारा करना पड़ा दो बिस्कुट और एक ग्लास पानी से।
इन्टरनेट से लगाव के कारण
ऐसी बीती छुट्टी की वह सुबह।

सुदीक्षा मुखर्जी
06 / EI / 39

परिश्रम का महत्व

"श्रम ही सों सब मिलता है,
बिन श्रम मिले ना काहि।
सीधी उंगरी घी जमो,
कबहूँ निकसत नाहि।"

परिश्रम एक ऐसा गुण है, जिसका आँचल थामकर मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। यह जीवन भवसागर के समान है, इसे मत्थे बिना इसमें पड़े सफलता के रत्न को पाना असंभव है।

परिश्रम को यदि व्यापक अर्थ में लें तो इसके दो रूप हमारे सामने आते हैं। एक शारीरिक परिश्रम तथा दूसरा मानसिक। समाज के उत्थान के लिए दोनों प्रकार के परिश्रम का महत्त्व है। शारीरिक परिश्रम से उत्पादन में सहायता मिलती है तो मानसिक परिश्रम ज्ञान-विज्ञान था कला-कौशल को आगे बढ़ाने में सहायक होता है।

मनुष्य परिश्रम के सहारे ही जंगली अवस्था से वर्तमान विकसित अवस्था तक पहुँचा है। आज तक मनुष्य ने कितना परिश्रम किया। खेती की, अन्न उपजाया, वस्त्र बनाए। घर, मकान, भवन, बाँध, पुल, सड़कें बनाई। तकनीक का विकास किया, जिसके सहारे आज तक (यह) जगमगाती सभ्यता चल रही है। पहाड़ों की छाती चीरकर सड़कें बनाने, समुद्र के भीतर सुरंगें खोदने, धरती के गर्भ से खनिज-तेल निकालने, आकाश की ऊँचाइयों से उड़ने तथा जगत के रहस्यों को समझने में मनुष्य ने बहुत परिश्रम किया है।

कछुए और खरगोश की दौड़ इसका प्रतीक है जिसमें कछुआ अनवरत चलते हुए परिश्रम करनेवाले खरगोश से पहले पहुँच गया था। परिश्रम के बल पर अनवरत अभ्यास से मनुष्य किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निशान।।

कहा भी गया है कि, "ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं"। जो व्यक्ति करते हैं वे जीवन की सभी उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त करते हैं, अतः उनको किसी चीज़ का अभाव नहीं होता, वे चिंता मुक्त होते हैं। परिश्रमी व्यक्ति समाज में सम्मान पाते हैं तथा उनकी देश-विदेशों में ख्याति होती है।

परिश्रमी व्यक्ति अपने जीवन का स्वयं भाग्य विधाता है।
भाग्य जीवन को मानने वाले स्वयं अपनी राह में रोड़े बिछाते हैं-

श्रम जीवन का सार है। श्रम मानव का हार।
श्रम करता है गुण महा श्रम सच्चा व्यवहार।

भव्या
06/Z1/18

लघु कथा

आलस की मार

खेत में गेहूँ की फसल उग चुकी थी। किसान रामलाल को अपनी फसल काटने के लिए बस कुछ ही दिन थे। गाँव में मज़दूरों की सख्त कमी थी। इस हाल में वह फसल कैसे काटे? आज, कल करते-करते दस दिन बीत गए थे। रामलाल हर रोज अपने खेत तक आता और उपज को देखते-देखते अपने घर लौट जाता। एक-दो पैसा बचाने के लिए, जो मज़दूर उसे मिलता वह उन्हें वापस भिजवा देता। एक दिन इसी प्रकार जब वह खेत की ओर जा रहा था तो उसने हवा में नमी को महसूस किया और दौड़ते-दौड़ते व खेत तक पहुँचने ही वाला था कि बारिश होने लगी। आरी उठाई और जल्दी से फसल खुद काटने लगा परंतु बहुत देर हो चुकी थी। तब उसकी पत्नी ने उसे कहा कि "मोहर लुटा जाय और कोयले पर छाप पड़े"।

सुप्रजा
06/EC/06

जीत का उल्लास-खेल और जीवन में

'भारत विश्व विजेता' 20-20 कप के जीत के बाद सारे देश में यही नारा था और एक हलचल सी मच गई। जैसे ही आखिरी विकेट गिरा पूरे भारत में लोगों ने जश्न मनाना शुरू किया। फाइनल के दिन भी कैफे, रेस्टोरेन्ट आदि लोगों से भरे हुए थे। मैं भी अपनी सहेलियों के साथ मुँबई के एक छोटे से कैफे में मैच देख रही थी। कैफे की सजावट देखती ही बनती थी। अभी खिलाड़ियों के पोस्टर लगाए गए, हमारा तिरंगा भी लगाया गया था और यही नहीं कई अलग तरह के पकवान बनाए गए। कैफे एक दम चकाचक लग रहा था। कैफे को इस तरह सजाया गया था जैसे वह एक नयी नवेली दुल्हन हो।

मैच के दौरान जो टेनशन मैंने महसूस की ऐसा मैंने अपनी परीक्षाओं के लिए भी महसूस नहीं की थी। कई लोग जो कभी ईश्वर में विश्वास ही नहीं रखते यहाँ तक उनकी पूजा भी नहीं करते वे उस दिन भारतीय टीम के लिए अपने दिल से मन्नत माँग रहे थे। मैच के समाप्त होते ही सभी कैफे से निकलकर अपने गाडियों में बैठकर एक कतार के रूप में चलाने लगे और ज़ोर जोर से चक दे इंडिया गाते रहे। यह दृश्य देखकर मैं सोचने लगी कितना जोश था सब में अगर इसी जोश के साथ इस देश के युवक मिलकर काम करते तो हमारा देश उन्नति के पथ पर होता। मैं भारतीय टीम के जीत को अनदेखा नहीं कर रही हूँ लेकिन बस इतना कहने की कोशिश कर रही हूँ कि चाहे खेल हो या जीवन वह जोश हमेशा होना चाहिए कुछ कर दिखाने का।

केरोलाइन, 06/EC/08

कविता

माँ का प्यार

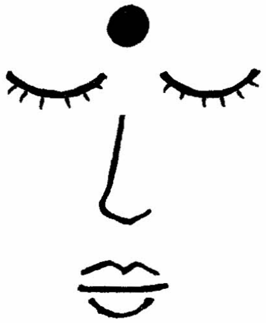

मुड़ती हूँ उस काल में
जब मैं पैदा हुई थी
तुम्हारी गोद में बैठी थी
मुझे खुशियाँ देती थी
हाथ पकड़कर चलना
सिखाती थी
चलना सिखाकर
दुनिया का सामना
करने को कहती थी

माँ तुम्हारे बिना जीवन क्या
बिना प्यार और खुशियाँ
मेरे लिए एक प्यारी देन है
भगवान से
हम रहेंगे एक साथ
आजकल और हमेशा

लीबा वरगिस
06/SW/503

जीवन एक गूँज है

एक छोटा बच्चा अपनी माँ से नाराज होकर चिल्लाने लगा, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ। मैं तुमसे नफरत करता हूँ"। पिटने के डर से वह घर से भाग गया। पहाड़ियों के पास जाकर चीखने लगा, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ। मैं तुमसे नफरत करता हूँ"। वहाँ पर वही आवाज़ गूँजने लगी। यह जिन्दगी में पहली बार था, जब उसने कोई गूँज सुनी। वह डर कर अपनी माँ के पास भागा और बोला। घाटी में एक बुरा बच्चा है जो चिल्लाता है। मैं तुमसे नफरत करता हूँ"। उसकी माँ सारी बात समझ गयी। उसने बेटे से कहा कि वह पहाड़ी पर जाकर फिर से चिल्ला कर कहे, "मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ"। छोटा बच्चा वहाँ भाग कर गया और चिल्लाया और वहीं आवाज़ गूँजी। हमारा जीवन एक गूँज की तरह है। हमें वही वापस मिलता है, जो हम देते हैं।

केरोलाइन, 06/FA/04

ईश्वर का प्रेम

प्यार का दूसरा नाम ईश्वर है।
वही ईश्वर मुझे प्यार करता है।

चाहे मैं पापी हूँ।
आप का दोषी हूँ।
फिर भी मेरा ईश्वर
मुझे प्यार करता है।।

चाहे मैं रोगी हूँ।
रोग से पीड़ित हूँ।

फिर भी मेरा ईश्वर
मुझे प्यार करता है।।

चाहे मैं दुःखी हूँ।
दुःख से व्यथित हूँ।।
फिर भी मेरा ईश्वर
मुझे प्यार करता है।।

सिनी के. ओ.
06/SW/530

हम किसकी ज्योति से देखते हैं?

'एक शिष्य ने अपने गुरू से पूछा-हम जो देखते हैं वह किसकी ज्योति से देखते हैं? गुरू ने उत्तर दिया हम सूर्य की ज्योति से देखते हैं। शिष्य ने फिर पूछा जब सूर्य अस्त हो जाता है तब किसकी ज्योति से देखते हैं? गुरु बोले तब हम अग्नि, विद्युत या चन्द्रमा की ज्योति से देखते हैं। शिष्य ने पूछा जब अन्धेरी रात हो और ये सभी ज्योति न हो तब? गुरु बोले-तब हम ध्वनि के सहारे से ज्योति का काम लेकर देखते हैं और अगर ध्वनि भी न हो तो स्मृति के सहारे से अनुमान के आधार पर देखते हैं। इन सभी ज्योतियों का आधार ज्ञान है और ज्ञान का आधार आत्मा है। यदि ज्ञान न हो तो देखना, न देखना दोनों बराबर हो जाते हैं। जिस भाषा को हम जानते नहीं उसे देखते हुए भी नहीं देख पाते। ज्ञान का प्रयोग और इंद्रियों का अनुभव करने के लिए मन के सान्निध्य की जरूरत होती है क्योंकि मन का साथ न हो तो किसी भी इंन्द्रिय को ज्ञान नहीं होता और यह सब आत्मा के होने से ही होता है क्योंकि मूल ज्योति तो आत्मा ही है, हम इसी ज्योति के बल पर दर्शन कर पाते है, देख पाते हैं।

रिबी, 06/SW/535

एक फूल और एक मालिक

दोस्तों,

जिन्दगी हसीन है।
जब हम इस संसार में जन्म लेते हैं,
तो किसी सही

बल्कि ईश्वर की इज्जत से जनम लेते हैं।
जब जीवन में हार होती,
तो कभी जीत, हम सब, हमारे

मालिक, को सौंप देना चाहिए।

हमारा एक ही मालिक "ईश्वर"
लो प्रस्तुत है एक मन की
छोटी-सी बात
एक शाम की घडी
जब मैं कश्ती में चली
मैं ने देखी एक सुंदर सी कमल की कली
उस कली ने कहा "मैं भी आऊँ तुम्हारे साथ?"
तब चौंककर खडी, मैं छडी से
सोचती क्या तुम हो इसमें।
क्या विश्वास है मुझ में।
मैं ने पूछती कली से "क्या मुझे जानती हो तुम?"
वह मुस्कुराती बोली......
"तुम्हें क्यों मैं जानूँगी ?"
मुझे तो मालूम है मुझको ही
तेरा क्या वास्ता मुझको
अरे! मैं सोचती.....इतनी सुन्दर।
इतनी वीर और जोशीला।
क्या इस दुनिया की रीति नहीं....
क्या कोई भी किसी अजनबी के साथ जो पडेगी?
तभी उस कली ने दी मुझे एक तालीम......
वह बोली
"तुम ऐसे क्यों नहीं सोचते
अजनबी तो तुम हो सही
लेकिन मुझे मुझमें ही विश्वास होनी
जब मेरे मालिक है मेरे साथ
तो मैं क्यों हैरान होती।"

आशा जोर्ज
06/SW/534

चाँद से बात करें

अस्तबल में समय के पाँव थमें हैं
तमस में डूबा है खामोश अकेलापन
अलार्म सुनने के लिए आवाजें सोई
चिमनी के साथ ही सोचा उजाला
नींद नहीं आती चलो छत पर टहलें
चाँद जाग रहा होगा चाँद से बात करें
बत्तियाँ जलाएंगे, बंद पलकों को चुभेंगी
किसी चेहरे की तलाश में खोलेंगे दराजें
आहट होगी, जाग जाएँगी मासूम से लमहें
बडी मुश्किल से लोरी सुन कर सोए हैं
क्या अपने से बात करें
फिर पिछले सच से सामना होगा
टूट जाएगा अंधेरी दुनिया का तिलस्म
जो भी कहना है चाँद से कह लें
चाँद भी तो तनहा है चलो चाँद से बात करें।

श्वेता रवि
06/MT/509

संबंध

उसने दृढ़ निश्चय कर लिया है। शाम को घर पहुँचते ही वह अपने दीदी से बोल देगी "दीदी, कल से आप मेरे साथ ही कॉलेज चलेंगी।" जब उसके पास एक स्कूटी है तो उसकी दीदी को बस में जाने की क्या आवश्यकता।

"तुम्हें" तो सुबह सी-ए क्लास के लिए भी जाना है। और तुम्हारी कॉलेज से सिर्फ ग्यारह बजे ही शुरू होता हैं। मेरे लिए दस बजे जाने का कष्ट न करो। मैं बस में चली जाऊँगी।" न जाने किस मनहूस घड़ी में दीदी की बात मान ली थी। उसे स्वयं पर गुस्सा आ रहा है। सुबह सी. ए. क्लास से वापस नौ बजे आकर कुछ समय टीवी देखने और पड़ाई करने का समय मिलेगा। कुछ ऐसा ही सोचा था उसने उस समय।

वह कॉलेज के लिए आज जल्दी निकल पडी। उसे अपने लिए कुछ पुस्तक खरीदने थे। दुकान से बाहर निकल रही थी, तभी एकदम सारा बदन तपने लगा था। सामने किसी के स्कूटर में उसकी दीदी जा रही थी। मन में तो आया था के सामनेवाले शीशे पर पत्थर मार कर दोनों का सिर फोड़ डालें। मगर वहा से वह हिल नहीं सकी। शाम को घर जाकर वह माँ और पिताजी को सब कुछ बता देगी। और दीदी से पूछेगी "किस का स्कुटर था? तुम्हारा उसके साथ क्या संबंध? कितने साल से यह चल रहा हैं?"

कॉलेज में बने रहना उसके लिए भारी हो रहा था। बार-बार वह अपनी घडी की ओर देखती थी। घड़ी की सुइयाँ तो वैसे रुक गई थी। कॉलेज खत्म होते ही उसने अपनी स्कूटी पेप, स्कुटर पार्क से निकाला और एकदम तेज कर दिया। गुस्से से उसके दिमाग की नाडी फटी जा रही थी। वह गिरते-गिरते बची। उसने एकदम जो ब्रेक ले गयी तो स्कुटी थोडी उलट गयी। उसके मन में आया कि स्कुटी के सामने आए लडके को झापड़ लगा दे।

"सीमा, तुम?"

वह थोडी चौकी। राज था। उसके साथ स्कूल में पढ़ता था।

"हलो" जबरदस्ती अपने होठों को हसी का जामा पहनाते हुए उसने कहा "इधर कहाँ?"

"घर जा रहा हूँ।"
"आओ मैं छोडती चलूँगी। वही हैं न तुम्हारा घर?
"हाँ सीमा, तुम्हारे घर की ओर ही है।"

और वह स्कुटी फिर से चलाने लगी। पर इस बार सवाल उठने लगी। वह जैसे स्वयं से पूछने लगी, "राज के साथ तुम्हारा क्या संबंध है?"

मंजूषा नायर
06/MT/514

उठेंगे हमेशा

मिट्टी में जमने पर भी
बीज पेड़ सा उठता है।
आग में जलने पर भी
सोना प्रकाश से जल उठता है।

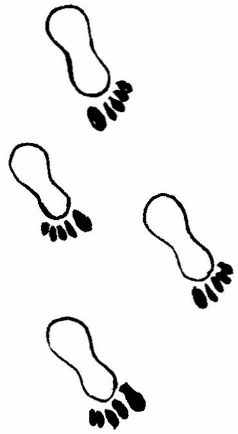

काट डालने पर भी
चंदन से खुशबू उठती है।
तो हम क्यों कष्टों से न उठे?
खड़े होकर सामना करेंगे
जो विधि ने हमें गिराना चाहा
सफलता के मुकुट पहनकर कहेंगे
''क्या सोचा, मैं गिरूँगी?''

कृतिका पी.
06/BT/45

बच्चे काम पर जा रहे हैं

सुबह-सुबह कोहरे से छिपी सड़क पर
बच्चे काम पर जा रहे है
काम पर क्यों जा रहे है बच्चे?
क्या अंतरिक्ष में गिर गई है सारी गेंदें
क्या दीमकों ने सारी रंग-बिरंगी किताबों को खा लिया है
क्या सारे खिलौने काले पहाड़ के नीचे दब गए है
करो मदरसों की इमारतें किसी भूकंप में ढह गयी है
पर दुनिया की हजारों सडकों से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
काम पर जा रहे है।

प्रीति
06/HS/06

लघुकथा

कर भला हो भला

एक साधू रहता था, जो घर घर जाकर भोजन लेता था। पर वह सभी को खिलाने के बाद यानी अन्य भूखे लोगों को खिलाने के बाद, बचा हुआ खाना खाता था। एक दिन वह एक बुढ़िया के घर में भोजन माँगने गया था। वह बुढ़िया बहुत कंजूस थी। उसने गुस्से में थोड़ा-सा बचा हुआ खाना उस साधू को दे दिया। वह फिर दूसरे दिन आया, तब भी उस बुढ़िया ने उसे थोड़ा-सा खाना देकर भेज दिया। तीसरे दिन उसे फिर दूर पर उपस्थित देखकर वह क्रोधित हो उठी। वह ऐसा कुछ करना चाहती थी कि वह साधु फिर

कभी वापस न आए। उसने खाने में जहर मिलाकर उस साधू को दे दिया। वह साधू उसे लेकर जा बैठा और ध्यान करने लगा। इतने में उसने वहाँ एक थके हुए आदमी को आते हुए देखा। उसे बुलाकर वह भोजन खाने को कहा। उसने भी भूख के कारण सारा खाना खा लिया था। वह आदमी और कोइ नहीं, उस बुढ़िया का बेटा था। उसने घर पहुँचते ही, बुढ़िया की गोद में अपने प्राण त्याग दिये।

जोस्फीन मेजेला
06/MT/18

ये जीवन

ये जीवन, थाम रहा है मेरा हाथ,
जाने कहाँ ले जा रहा मुझे साथ-साथ,
एक लम्बी राह है,
दिल में मंज़िल पाने की चाह है,
एक हलचल-सी है
न जाने क्यों बेताबी है?
न जाने कहाँ ये जीवन ले जायेगा?
कहीं साथ तो न छूट जाएगा?
न जाने कौन देगा साथ,
न जाने कौन छोड़ देगा ये हाथ,
ये जीवन, थाम रहा मेरा हाथ,
चलना तो पड़ेगा ही इसके साथ-साथ,
कभी भी कुछ भी हो सकता है,
इस जीवन से मेरा हाथ छूट सकता है।

झूठ

एक दिन मैं और मेरी सहेलियाँ बाहर गई। मेरी एक सहेली ने हम सब कि कहा कि उसके पिताजी हर रोज़ उसे जेब खर्च के 500/- देते थे। जब हम खाने बाहर गये और बिल आया तो हम सब ने पैसे दिये पर उस लड़की ने कहा कि पैसा वह घर पर भूल आई है। जब हम सब वापस आ गये तो मैंने उसके बेग में उसका बटुआ देखा। जब मैंने उसे अकेले बुलाकर बात पूछी तभी उसने बताया कि वह हम सब से झूठ बोलती थी। और उसके पिता जी उसे इतना पैसा नहीं देते थे।

आइशा आरिफ
06/EC/53

एक और अधूरी प्रेम कहानी

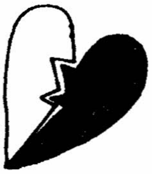

हैं कितना सुन्दर ये सागर
जो बरसों से बहता चला आया है।
बस जाता है ये दृश्य हर किसी की नैनों में,
पर सुनता नहीं कोई भी कान उसकी
दर्द भरी ये कहानी।
कहीं पर किसी ने कहा था, एक अधूरी प्रेम कहानी
मिला था कहीं पर सागर भी अपने प्रियतम से,
कुछ न कहा, कुछ न सुना,
सब खेला उन आँखों तक ही था।
किसी ने कहा, किसी से पूछूँ
जान गये इन आँखों के बारे में बुजुर्ग
फिर कुछ न देखा गया, और हो गई चाँदनी की शादी
दूर, दूर.......बहुत दूर........
.......आसमानों में।।
बस गयी चाँदनी का घर वहाँ पर
और तारे बने उनके बच्चें
और देवदास के दिल की बात, वहीं ठहर गयी,
कुछ न कहा किसी से
कभी शिकवा तक नहीं की
बस अपना गम पत्थरों पर हलफा मारता चला आया,
दे बरसों की बात, वो हम सबसे कहते हैं।
पर, हम में से कितने वो सुनते हैं?

कृष्णा डी. आर.
06/El/51

दवाई

निशा को कॉलेज के लिए देरी हो रही थी। तभी उसकी मम्मी ने एक दवा की शीशी लाने को कहा उन्हें बहुत जोरों से खाँसी हो रही है। निशा हड़बड़ी में बिना देखे दवाई शीशी उठा लाई। उसे इतनी हड़बड़ी थी कि उसे दरवाजे का भी होश न रहा है और वह दरवाजे से टकरा गई। दवाई नीचे गिर गयी। माँ को गुस्सा आ रहा था और उसे भी बुरा लग रहा था। तभी उनकी पालतू बिल्ली टिप्टी ने वह दवाई चख ली। थोड़े देर बाद उसकी मौत हो गई। दवाई की शीशी देखी तो पता चला कि उस दवाई का समय समाप्त हो गया था। तब माँ-बेटी के दोनों मन में यह ख्याल आया कि जो होता है अच्छे के लिए होता है।

गीतिका
06/BT/05

मेरा प्यारा त्योहार

क्रिसमस

क्रिसमस का अर्थ है जीसस क्राइस्ट (येसु मसीह) का जन्म का समारोह। वास्तव में क्रिसमस पर्व केवल ईसाई लोग ही मानते हैं। लेकिन आज के इस युग में भारत देश के प्रत्येक भाग में क्रिसमस समारोह मनाया जाता है। सभी लोग इस पावन पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इतना उत्साह उमंग समा जाता है। प्रत्येक के मन में 25 दिसंबर का दिन इस सुहावने समय में सभी स्कूल, कॉलेज और सरकारी दफ्तर बंद रहते हैं।

येसु मसीह का जन्म 25 दिसंबर को बेथलेहेम की चरणों में हुआ था आज से कई वर्ष पूर्व हुआ था। येसु क्रीस्त पिता परमेश्वर का एकलौता बेटा था। वह इस धरती पर आया, हम मानव आदि को पाप से मुक्ति दिलाने के लिए इस संसार को पाप से बचाने के लिए, वह हमारी सभी पापों को अपने काँधे पर ढोया और क्रूस पर लटकाया गया। इसी येसु मसीह ने हमें मुक्ति दिलाई। इस त्योहार को हम क्रिस्टियन बड़ी धूम-धाम के साथ मनाते हैं।

सभी लोग जीसस का स्वागत करने के लिए एक महीना और फिर एक हफ्ता पहले से ही लोगों को जीसस आने का संदेश सुनाते है कैरेल गीत के माध्यम से, अपनी मधुर गीतों से सारी जगह गूँज उठती है। हमारी जितनी भी युवक युवतियाँ जहाँ कही भी गए खुशी के साथ गीतों को गाते नाचते एक घर से दूसरे घर जाते हैं।

उत्साह-पूर्वक और सुनने वाले भी बड़ी जोश से उसका मजा उठाते है उस मधुर गीतों का आनन्द लेते है। सभी गिरजाघरों में 24 दिसंबर को रात में प्रार्थना और पवित्र मिस्सा (Mass) होता है जीसस का स्वागत करने के लिए। परिवार में सबके साथ भोजन का व्यवस्था किया जाता है दूसरे धर्म के भाई-बहनों को बुलाया जाता है। नाना प्रकार के मिठाइयाँ बनाई जाती है। आपस में बाँटा जाता है अपनी-अपनी पड़ोसियों के साथ में। उपहार और कार्ड दिया जाता है। सभी गिरजाघरों को और अपनी घरों को क्रिसमस ट्री लगाकर सजाया जाता है।

बच्चे खुशी से सेन्टा क्लास का राह देखते है उसका लाल रंग का कपड़ा, उड़ता हुआ दादी को देखते है। सेन्टा क्लास अपना डण्डा के साथ बच्चों के लिए कुछ उपहार लेकर आता है अपनी झोली में, उसे पाकर बच्चे खुशी से मचल जाते हैं।

25 दिसंबर के सबेरे से ही लोग गिरजाघरों, दोस्तों और रिश्तेदारों के घर जाते हैं और खुशी का संदेश सुनाते हैं। मिठाइयाँ बाँटते हैं। क्रिसमस के समय सभी लोग अच्छी-अच्छी नई कपड़े पहन कर घूमने जाते हैं, अपने-अपने दोस्तों से मिलने के लिए। सभी लोगों के लए यह अवसर बड़े आनन्द और उल्लास का समय है।

शोभा कुल्लू
06/SC/02

कल्पनाएँ

कुछ सपने मैंने देखे
कुछ कल्पनाएँ मैंने की
जब मैंने उन्हें देखा
सोचा कोई नही
मुझे समझाती मेरे हर दुःखों को महसूस करती
खुशियों में खुश होती
मुसीबतों में साथ होती
हर पल यही सोचा
तो खुशियाँ शायद सिर्फ मेरे ही दामन चूमती
और जब आँखें खुलती
उम्मीदें सिर्फ सपनों की मोहताज होती।

अनीजा
06/BT/28

सही पहचान

राह के काँटे कहते हैं
अरे! संभलकर चलना
उभरे हुए काँटे जहाँ
वहीं काँटों का आना
जीवन की परिभाषा है
सत्य काँटों सा चुभता है।
जादुई लहरों की ओर बढ़
तुझे रोता हुआ देख ही
हर फूल ये हँसता है
रे काले मतवाले मन
कदम-कदम पे तूफान,
चलना तो है ही तुझे
ले सही राह पहचान।

रोज मेरी एस
06/EI/32

देश हमारा भारत प्यारा

देश हमारा भारत प्यारा,
इसे प्रकृति ने खूब सँवारा।
हम इसके गुण गाते हैं,
इसका सम्मान बढ़ाते हैं।

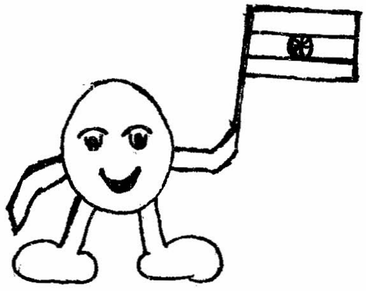

हिमालय जैसे पर्वत हैं,
गंगा जैसी नदियाँ हैं।
खेतों में हरियाली है,
गाँवों में खुशहाली है।

नगरों की शोभा निराली है,
सबको मोह लेनेवाली है।

जननी एस
06/PH/18

बेटी

ओस की एक बूँद सी
होती है बेटियाँ,
स्पर्श खुद दुख हो तो
रोती है बेटियाँ,
रोशन करेगा बेटा तो
एक ही कुल को
दो-दो कुलों की लाज को
ढोती है बेटियाँ,
कोई नहीं है दोस्तों
एक दूसरे से कम
हीरा है अगर बेटा
तो मोती है बेटियाँ,
काटों की राह पे खुद
ही चलती रहेगी
औरों के लिए फूल ही
बोती है बेटियाँ,
विधि का विधान सही
दुनिया की रस्म है।
मुठ्टी में भरे नीर
सी होती हैं बेटियाँ।

फातिमा टोप्पो
06/HS/18

खोने पर भी एक दुआ...

उस दिन आसमान भी दुखमय था
मेरी तरह वह भी अपनी अश्रु बहा रहा था
कमरे के एक कोने में बैठते हुए
उस खोए पलों को बटोरा।
उसे पाना चाहा मैंने
पर पा ना सकी
अंत में जब उसे पाया
उसका दिल जीत न सकी।
वह दूर है कही अब मुझसे
जाने कैसा होगा, जाने कहाँ होगा
उसे खोकर खो दिया मैंने जिन्दगी का अर्थ
फिर भी दुआ देती हूँ उसे दिल से
खुशियों से भरे उसका जीवन।

कृष्णा वेणुगोपाल
06/SC/50

प्रकृति

प्रकृति कितनी मनमोहक है,
ये हरे-भरे पेड़-पौधे,
झिल-मिलाती लहरे,
चिड़ियों की मधुर संगीत
जैसे मन को मोह लेती है।
ऊँचे-ऊँचे पहाड़ जैसे चुनौती दे रहे हों,
समुद्र जैसे जीवन की विशालता दर्शाती हो,
आशा है प्रकृति का यह देन सदा हम पर रहे
यह तभी संभव है जब हम प्रकृति के साथ
कोई खिलवाड़ न करे।

काव्या
06/BT/03

प्रेरणा

जिंदगी तो उथल-पुथल सी हो गई,
राह न जाने किस तरफ मुड़ गई।
जीवन का उद्देश्य था सफल होना
और यह सफर में लिखा था सुख का खोना।

फिर मिली मुझे मेरी माँ से प्रेरणा,
कहती है जिंदगी है एक समझौता।
तुम अपना कर्म करो,
फल तुम्हें मिल जाएगा।
प्रतिज्ञा तो नहीं हारोगी,
सफलता तुम्हारे पैर छूएगी।

नीतू
06/BT/26

प्रभु का वंदन

ये कोयल की कूक,
ये फूलों की खुशबू
ये रंगीन उपवन प्रभु का
करते हैं वंदन।

ये सागर की लहरें,
बादलों का मंडराना
मानो करते हो प्रभु का गुणगान।

ये हवाई, ऊँचे पवन,
प्रभु का करते है वंदन।

मारशिला
06/HS/09

भारत देश की बढ़ती आबादी

भारत देश की बढ़ती आबादी,
मानो है कोई बरबादी,
कैसे मिले इससे आज़ादी।
रेलवे, बस या हो कार,
सबकी कहानी एक ही है यार,
हर समय मिलता यहाँ,
धक्के का उपहार।
भारतवर्ष हमारी आबादी में,
है तो नंबर वन,
आबादी की गति के सामने,
हार मान जाए पवन।
अगर लेना हो भीड का मजा,
तो दोस्त बिना किसी झिझक के यहाँ आना।
हर चौराहे पर लिखा है,
एक या दो बस,
पर हमारी जनता कहे,
हम तो चाहें पूरे दस।

निकिता
06/HS/36

फिर मुझे तेरी याद आई थी

रात की तन्हाई थी,
सन्नाटे की शहनाई थी,
चाँद की धुँधली-सी किरण
ज्योति ज़मीन पर आई थी,
मुझे तेरी याद आई थी।

पवन की मन्द-मंद लहर ज्योंही लहराई थी,
तभी किसी कोयल की मधुर आवाज़ आई थी,
मैंने समझा तूने मुझे आवाज़ लगाई थी,
फिर मुझे तेरी बहुत याद आई थी।

बैठा था वृक्ष के नीचे
जहाँ तालाब का किनारा था,
वृक्ष की डालियाँ और कमल के फूल,
ही मेरे अकेलेपन का सहारा था,
तभी तालाब पर आई वह चाँद की परछाई थी,
मैंने समझा तुम चली आई थी,
फिर तो मुझे तेरी बहुत याद आई थी।

वर्तमान चाहे कितना भी दुखद क्यों न हो
अतीत को मैं कैसे भूल जाऊँ
पर वर्तमान को देखकर भी मैं,
भविष्य के सपने कैसे सजाऊँ

पूजा सराफ़
06/EC/24

बीमारी किसको छोड़ती?

बाग उजाड़ थे। फूल खिल नहीं पाए थे। हरियाली पर पीलापन छाया हुआ था। वसंत का आने का सब इंतजार कर रहे थे। वसंत को अब तक आ जाना था। उस घर के मुखिया ने कहा।

'वक्त बदल गया है'। देखो क्या-क्या देखना पड़ता है। पत्नी बोली।

दादी ने कहा 'हमारे वक्त कितना अनुशासन था, मगर अब वह बात नहीं रही। मौसम का भी भरोसा नहीं, मनुष्य का भी।

जब उनके धैर्य लगभग चुकने की स्थिति में था, तब वसंत आया। थोड़ा डरते सहमते, घर के लोग खिल उठे। मगर सब मुँह फलाए हुए थे। वसंत ने कहा 'मैं

बीमार पड़ गया था। मुझे सर्दी ने जकड़ लिया था। बदनामी की तरह किसी तरह संकट से निकलकर आप तक पहुँचा हूँ।

दादा ने कहा "शुक्र है आ गया, बीमारी किसी को नहीं छोड़ती"।

माँ की आँखें

मेरी माँ की डबडब आँखें
मुझे देखती है यों,
जलती फसले कहती शाखें।
मेरी माँ की किसान आँखें
मेरी माँ की खोयी आँखें
मुझे देखती हैं यों।
शाम गिरे नगरों को
फैलाकर पाँखे।
मेरी माँ की उदास आँखें।
लडकियाँ
तितलियों की तरह उड़कर
लड़कियों का संसार
रंग बिरंगे कपड़े पहनकर
आते हैं सुबह ठीक आठ बजे
केथिड्रल रोड़ के स्टेल्ला मरीस के दरवाज़े पर।

सिन्धु
06/CH/30

जीवनी : मदर टेरेसा

"नर की सेवा ही नारायण की सेवा है"।

इस आदर्श को मानकर चलनेवाली ममतामयी माँ की मूर्ति मदर टरेसा है।

उनका प्रारम्भिक नाम था आगेनस गोवंसा वेयायू। इनका जन्म 27 अगस्त 1910 ई. में युगोस्लेविया के स्कोंपजे नाम स्थान पर हुआ था। उनके माता-पिता अल्बेनियन

जाति के थे। 18 वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने सेवा का कार्य शुरू किया।

नवम्बर 1928 ई. को आगनेस भारत आई। अगस्त 1944 ई. तक उन्होंने कलकत्ता के सेंइण्ट मेरी हाई स्कूल में शिक्षण कार्य किया और बाद में प्रधानाचार्य बनी। 1931 ई. में आगनेस ने अपना नाम बदलकर "तेरेसा" रख लीया। उन्होंने अपना सारा जीवन कोढ़िया की सेवा में लगा दिया। हृदय 1952 ई. में उन्होंने कलकत्ता में निर्मल में मदर टरेसा ने कुष्ट रोगालय की स्थापना की। मदर टरेसा पीडित और दलितों की सेवा में किसी प्रकार पक्षपाती नहीं थी। उनकी मान्यता है कि "प्यार की भूख रोटी की भूख से कही बड़ी है"। मदर टेरेसा का कहना है कि सेवा का कार्य एक अत्यन्त कठिन कार्य है। इस के लिए पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है।

1931 ई. में उन्हें पोप जान का शान्ति और धर्म प्रगति के टंम्पिल्टन फाउण्डेशन पुरस्कार प्रदान किया गया। विश्वभारती विश्वविद्यालय ने 'देशी कोतम' पदवी प्रदान की। भारत सरकार द्वारा 1962 ई. में उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि दी गई। 1908 ई. में ब्रिटन द्वारा 'आईर दी ब्रिटिश एम्पायर' की उपाधि प्रधान की गई। 19 दिसम्बर 1979 को उन्हें मानव कल्याण कार्यों के लिए नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया।

कर्मयोग का जो दर्शन गीता में परिलक्षित होता है वह मदर तेरेसा के जीवन में चरितार्थ हुआ है। खेद की बात है कि हाल ही में उनकी मृत्यु हुई। वह जीवन के अंतिम घडी तक सेवा करती रही। धन्य है उनका जीवन।

टी. गणपति प्रिया
06/SW/511

फीचर

बेटियों का डर

भले ही भारत 21 वीं शताब्दी में पहुँच गया है फिर भी यहाँ रहनेवाले लोगों का मन अविकसित है और पुरानी परम्परा ही चल रही है। अब भी माता-पिता बच्चों को शाम के समय घर से बाहर नहीं जाने देते। यदि मैं अपनी माँ से कहूँ.....

"माँ। कल हमारे कॉलेज में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हैं।"

"कितने बजे कार्यक्रम होनेवाला है।" माँ पूछेंगी।

"शाम के पाँच से सात बजे तक। मुझे जाने का मन कर रहा है।" यदि मैं कहूँ तो तुरन्त उत्तर मिलेगा

"नहीं नहीं बिलकुल नहीं। तुम वहाँ पढ़ने गई हो सिर्फ पढ़ो। अगर हम तुम्हारे पापा यहाँ होते तो हम तुम्हें साथ लेके जाते।"

"पर माँ।"

"मुझे कुछ नहीं सुनना।"

पता नहीं माता-पिता इतनी चिंता क्यों करती है?

आजकल सभी लड़कियाँ अपने ऊपर आनेवाले संकटों से पूरी तरह परिचित है। हर समय संकट के बारे में सोचकर घर के अंदर तो नहीं रह सकती हैं लड़कियाँ ?

माता पिता अपनी बेटियों के संबंध में कुछ ज्याद ही सतर्क हो जाते हैं। लेकिन इसमें उनका कोई दोष नहीं। उनके मन में एक अजीब-सा डर होता है। वह नहीं चाहते कि उनकी बेटियाँ समाज के गंदे काले हाथों में आ जाएँ। लेकिन वे इन सब चिंताओं में घिर कर अपनी-अपनी बेटियों की इच्छाओं को भूल जाते हैं।

स्वर्णलिपि मोहापात्रा
06/BT/49

प्यार

यह कैसा प्यार है-
जिसमें पाने वाले को
अंदाज़ा ही नहीं कि किसी ने
जिंदगी के अंधेरों में
प्यार की रोशनी बिखेरी है
क्यों फैली रोशनी को
समेटने पर आमादा है मन?

जी करता है कैसे
दिया हुआ सब अनदिया कर दूँ
ये तुम्हारी समझ का भरम हैं
या मेरा प्यार ही कुछ कम
मन की परतें खुरचने पर भी
नहीं मालूम

नम्रता शाह
06/HS/47

हिलमिल दीप जलाएँ

हिलमिल दीप जलाएँ।
गाँव-गाँव और
नगर-नगर में
घर गलियों और
डगर डगर में
जहाँ कहीं भी घिरे अंधेरा
उसको दूर भगाएँ
हिलमिल दीप जलाएँ।

नहीं कहीं हो अत्याचार,
हर मानव को हो सत्कार,
नहीं रहे कोई अज्ञानी,
कहीं नहीं हो खींचातानी,
कोई अगर हो अन्यायी,
उसको पाठ पढ़ाएँ,
हिलमिल दीप जलाएँ।

नहीं रहें कोई अब नंगा।
करे नहीं कोई भी दंगा,
आपस का सब भेद मिटाकर
सब भाई को गले लगाकर
नष्ट करे हम सब कुरीतियाँ
नया समाज बनाएँ
हिलमिल दीप जलाएँ।

लक्ष्या
06/SC/12

सच्चा प्यार

मेरा घर एक चिड़िया खाने से कम नहीं है। लेकिन सारे जानवरों में से मुझे अपने कुत्ते और बिल्ली से सब से ज्यादा प्यार है। जब मेरी बिल्ली नई-नई आई थी। तो मेरे कुत्ते को बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। रोज दोनों के बीच लड़ाई होती। बिल्ली उसके पास जाना न छोड़ती और कुत्ता उसे कहना न छोड़ता। एक दिन मेरी बिल्ली प्यारी ने प्यार से उसके साथ खेलना चाहा पर कुत्ते ने उसे जोर से काट दिया। यह देख मेरे क्रोध की कोई सीमा न रही। मेरे हाथ में एक पाउडर का डिब्बा था, मैंने उससे उसके सर पर दे मारा। उसके नाक से खून की धारा बहने लगी। देख कर मुझे दुःख हुआ। पर तब मैंने देखा की मेरी प्यारी बिल्ली उसके पास आकर आपके घाव को चाह रही थी। ऐसा लग रहा था मानो मलहम लगा रही है।

सच है कि जानवरों को इनसानों से भी ज्यादा प्यार देना आता है। जितना भी दर्द दो, वे हमे बार-बार प्यार ही करेगा।

अबीशा जॉब
06/EC/62